871
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1204/10/81

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 871

2011

॥ वन्देमातरम् ॥

स्वतंत्रता की देवी ।

871

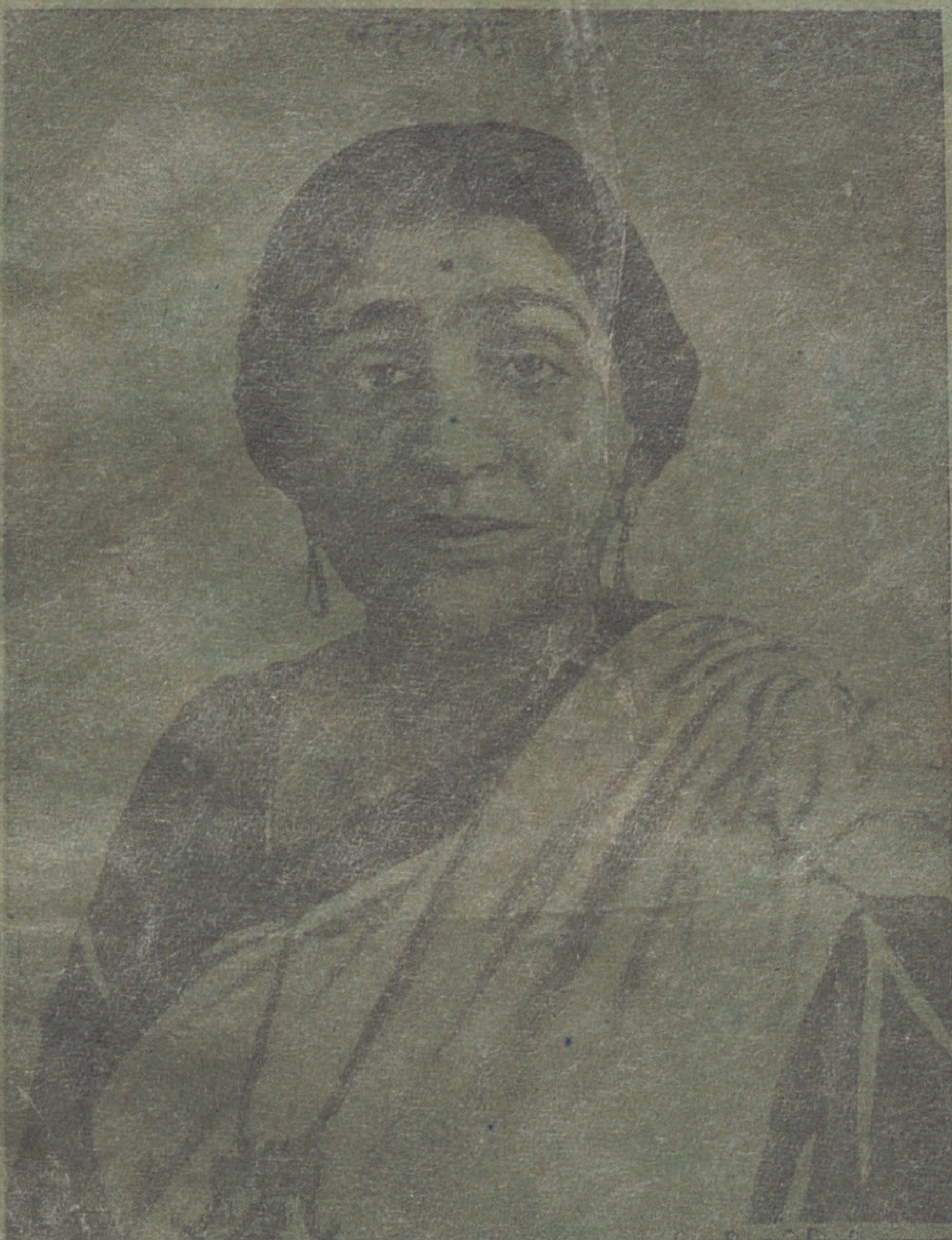

श्रीमती सरोजिनी नाइडू

प्रकाशक-गिर्राज किशोर अग्रवाल आगरा।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:—

ज्वालाप्रसाद वर्मा बुकसेलर

आगरा।

मूल्य -)॥

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930
DEPARTMENT

891·431
Ag 38 Saw

॥ वन्देमातरम् ॥

भारत की सिंहनी

अर्थात्

स्वतंत्रता की देवी

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—

ला० गिर्राजकिशोर अग्रवाल,

आगरा।

प्रथम बार] [मूल्य ।)॥

मुद्रक—बाबू सूरजभान गुप्त केसरी प्रेस, बेलनगंज आगरा।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 871
Date 23.12.71
GOVT. OF INDIA

ओ३म्

झण्डे की प्रार्थना।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झँडा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला॥
वीरों को हरषाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा॥ १॥
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में
कांपे शत्रु देखकर मनमें, मिट जावे भव संकट सारा॥ २॥
इस झंडे के नीचे निरभय लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा॥ ३॥
आओ प्यारे वीरों आओ देश धर्म पर बलि २ जाओ
एक साथ सब मिल कर गाओ प्यारा भारत देश हमारा॥ ४॥
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व मुग्ध करके दिखलाये तब होये प्रण पूर्ण हमारा॥ ५॥

सर फ़रोशी की तमन्ना।

(ले०—बिस्मिल)

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है॥
रह रवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरिये मंज़िल में है॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नायें शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर के महफ़िल में है॥
अब न अगले बलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है॥

पुष्प-हृदय ।

चाह नहीं है सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ूं हार में ललचाऊं ॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं डालाजाऊं ।
चाह नहीं है देवों के सिर चढ़ूं भाग्य पर इतराऊं ॥
मुझे तोड़ कर हे बनमाली,
उस पथ में देना तू फेंक ।
मातृ भूमि हित शीश चढ़ाने,
जिसपथ जावें वीर अनेक ॥

मौत से मत डरो ।

बुजदिलों को ही सदा मौत से डरते देखा ।
गो कि सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा ॥
मौत से वीरों को हमने नहीं डरते देखा ।
तख्तए मौत पै भी खेल ही करते देखा ॥
मौत इकबार जब आना है तो डरना क्या है ।
हम सदा खेल हीं समझा किये मरना क्या है ॥
वतन हमेशा रहे शाद काम और आजाद ।
हमारा क्या है अगर हम रहें रहें, न रहें ॥

एक निर्वासित का विलाप ।

परदेश में हैं हम दूर वतन, ऐ चर्ख़ हमें बरबाद न कर
कुछ हद भी है मुसीबत की तू हम पै सितम जल्लाद न कर ॥

आये हैं वतन को छोड़के हम घर-बारके छूटने का दिल पै है ग़म।
मारे हुये तकदीर के हम तू हम पै सितम बेदाद न कर॥
हम हिन्द के रहने वाले हैं कुछ-मुंह से न कहने वाले हैं।
दुख दर्द के सहने वाले हैं तू हम पै सितम ईजाद न कर॥
है "शमश" मुक़द्दर सोता है, रोने से भला क्या होता है।
क्यों हिन्द का नाम डुबोता है परदेश में तू फ़रियाद न कर॥

जितेन्द्र दास--गीत।

क्या लिखें आज़ाद होकर हम कहानी "दास" की।
दिल अगर हो तो सुनो दिल से कहानी "दास" की॥
फाके मस्ती में भी मस्तों की तरह वो मस्त था।
जेल में ही कट गई सारी जवानी दास की॥
शौक से दुनियां के लोगों को यही कहना पड़ा।
देश सेवा के लिये थी जिन्दगानी दास की॥

वीर गर्जना।

भारत शेर जागो बदला है अब के ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना॥
मत बुज़िदिली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने।
आखिर तो दम अदम को होगाकभी रवाना॥
स्वातंत्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना॥

दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित।
वालंटियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना॥
दिल में झिझक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना॥
"सरजू" समय यही है कुछ करलो देश सेवा।
दो दिन की जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना॥

तरानये फ़लक।

बाग़ में सर सर का झोंका, आशियाना ले गया।
अन्दलीबों को क़फस में, आबोदाना ले गया॥
कुछ गुले गुल्चीं का शिकवा, बुल बुले भारत न कर।
तुझको पिञ्जरे में है तेरा, चह चहाना ले गया॥
कौन कहता है जबर्दस्ती, से हम पकड़े गये।
जेल में खुद हमको शौके, जेलखाना ले गया॥
क्यों घटा अदबार की छाये, न अहले हिन्द पर।
खींच कर यूरोप है सब, मालो खजाना ले गया॥

नौ जवान की तमन्ना।

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते।
नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते॥

जुल्म करती है बहुत हिन्द पर नौकर शाही ।
उसकी बद्चाल मिटा जायेंगे मरते मरते ॥
दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवामर्दी से ।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते ॥
जेलखाने की भी खुश होकर बढ़ायेंगे रोनक ।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥
मातृ भूमि के लिये जान निछावर करदें ।
सबक़ भारत को पढ़ा जायंगे मरते मरते ॥
हैं तो ना चीज़ मगर इतनी जुरअत रखते हैं ।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते ॥
भगतसिंह, दत्त, दयानन्द, तिलक गांधी का ।
सबको फ़रमान सुना जायेंगे मरते मरते ।

वीर जीतेन्द्र की भावना ।

फाके करेंगे भूख से सदमै उठायेंगे ।
रोटी खराब जेल की हरगिज़ न खायेंगे ॥
दारो रसन से डर के न बुज़दिल कहलायेंगे ।
मर जायेंगे क़दम को पीछे न हटायेंगे ।
हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायें
ज़िन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायें
बैलों की तरह घास की सब्ज़ी न खायेंगे ।
कूटेंगे न हम मूँज न चक्की चलायेंगे ॥
बन्दे बला में फंस के न गरदन झुकायेंगे ।

मूछों पै ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे ॥

हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
जिन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥

नंगे रहेंगे धूप की सख्ती उठायेंगे ।
लेकिन न तन पै ग़ैर के कपड़े सजायेंगे ॥
कुरबानियों का मुल्क को रस्ता दिखायेंगे ।
मर मरके अपनी क़ौम को जिन्दा बनायेंगे ॥

हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे ।
जिन्दगानियों के हाल को बेहतर बनायेंगे ॥

शहीदों का सन्देश

दिन खून का हमारे प्यारो ! न भूल जाना ।
खुशियों में अपनी हम पर आंसू बहाते जाना ॥
सय्याद ने हमारे चुन चुन के फूल तोड़े ।
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना ॥
गोली को खाके सोये जलयान बाग में हम ।
सूनी पड़ी कब्र पर दीया जलाते जाना ॥
हिन्दू और मुसलिमों की, होली है आज होली ।
बहते हमारे रंग में दामन भिगोते जाना ॥
कुछ कैद में पड़े हैं हम कब्र में पड़े हैं ।
दो बूंद आंसु इन पर 'प्रेमी' बहाते जाना ॥

शहीदों के खूं का असर

शहीदों के खूं का असर देख लेना ।
मिटायेंगे ज़ुलमों का घर देख लेना ॥

झुका देंगे गरदन को हम जेरे खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुदगर्ज़ गोली चलाते हैं हम पर।
तो क़दमों पै उनका ही सर देख लेना॥
जो नख्ल हमने सींचा है खूने जिगर से।
वह होगा कभी बारवर देख लेना॥
खुजन्दो हुआ हिन्द आज़ाद अपना।
छपेगी यह एक दिन खबर देख लेना॥

भजन।

है वतन के वास्ते अक्सीर बन्देमातरम्।
देश के खादिम की है जागीर बन्देमातरम्॥
ज़ालिमोंको है अगर बन्दूक पर अपनी ग़रूर।
है इधर हम बेकसों का तीर बन्देमातरम्॥
क़तल की धमकी न दे हमको हमारे सब्र से।
तेग़ पर हो जायगी तहरीर बन्देमातरम्॥
किस तरह भूलूं इसे मैं जबकि क़िस्मत में मेरी।
लिख चुका है राक़िं में तहरीर बन्देमातरम्॥
फिक्र क्या जल्लाद ने गर क़त्ल पर बांधी कमर।
रोक देगी दूर से शमशीर बन्देमातरम्॥
जुल्म से गर कर दिया खामोश मुझको देखना।
बोल उठेगी फिर मेरी तस्वीर बन्देमातरम्॥
संतरी भी मुज़तरिब थे जब कि हर झंकार में।
बोलती थी जेल में जंजीर बन्देमातरम्॥

❋ वन्देमातरम् ❋

भारत का प्यारा दुलारा जवाहर ।
वतन का सहारा हमारा जवाहर ॥
बुलाने को आज़ादी भारत में फिर से ।
गया जैल अन्दर हमारा जवाहर ॥

राष्ट्रीयपत पं० जवाहरलाल नहरू ।

जातीय संगीत ।

आप भी हमको न जो अपनायेंगे ।
तो प्रभो ! किसकी शरण हम जायेंगे ?
कब तलक आंसू पियेंगे मौन हो ।
कब तलक चुपचाप यों ग़म खायेंगे ?

भजन ।

हे पिता दीनों के दुख को टारने वाले हो तुम ।
डूबती नैया को स्वामी तारने वाले हो तुम ॥
तुम पिता हम पुत्र हैं पालन हमारा कर रहे ।
तुम ही सिर्जनहार सबके सारने वाले हो तुम ॥
तुम से बढ़ कर इस जगत में और कोई है नहीं ।
मान अभिमानी मनुज के मारने वाले हो तुम ॥
निरविकारी हो प्रभू आकार से तुम रहित हो ।
शेष तुम ही हो धरा के धारने वाले हो तुम ॥
दुख हरो सुख दीजिये कर जोड़ कहता रूप यों ।
दुख हरण अरु सुख की भिक्षा डारने वाले हो तुम ॥

ग़ज़ल ।

जगदीश यह विनय है जब प्राण तन से निकले ।
प्रिय धर्म देश रटते यह प्राण तन से निकले ॥
भारत वसुन्धरा पर, सुख शान्ति संयुता पर ।
शश्याम श्यामला पर यह प्राण तन से निकले ॥
देशाभिमान धरते, जातीय गान करते ।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले ॥
भारत का चित्त पर हो, युग नेत्र के निकट हो ।
श्री जाह्नवी का तट हो तब प्राण तन से निकले ॥

लहर ।

सुना है तेज़ करते हैं दुबारा धार खंजर की ।
करेंगे आज़माइश क्या मुकर्रर वह मेरे सर की ॥
सबब पूछो तो यों बोशे नहीं ज़ाहिर ख़ता कोई ।
मगर कुछ दीख पड़ती हैं शरारत दिल के अन्दर की ॥
मेरे दर्द जिगर में आह में नाले में सवन में ।
नज़र आती है हरसू सूरते ज़ालिम सितमगर की ॥
ख़मीदा करके गर्दन को कहा तेग़ा ज़माई हो ।
रह गई क़ब्ज़ए कातिल में ख़ाली मूंठ खंजर की ॥

आज़ादी की दुआ ।

प्रभु हो मेहर की नज़रों से गर इरशाद तेरा हो ।
तो यह उजड़ा हुआ भारत अहा ! आबाद मेरा हो ॥
हज़ारों साल से बे दर्द लोगों के हवाले है ।
न यूं ग़ैरों के पंजे में वतन बरबाद मेरा हो ॥
ख़ुशी रखता है दुनियाँ को सभीका अन्नदाता है ।
मगर अफ़सोस फिर भी यह चमन नाशाद मेरा हो ॥
कटें बेड़ी गुलामी की तेरी नज़रे इनायत से ।
यही फ़रियाद करता हूँ वतन आज़ाद मेरा हो ॥
उठाते हैं मुसीबत पर मुसीबत जिस तरह से हम ।
पड़ा पिंजरे में मेरी ही तरह सैयाद मेरा हो ॥

ग़ज़ल ।

ख़ौफ़ आफ़त से कहाँ दिल में रिहा आयेगी ।
बात सच्ची है जो वह लब पै सदा आयेगी ॥

दिल से निकलेगी मरके भी न वतन की उल्फत ।
मेरी मिट्टी से भी खुशबूए वफा आयेगी ॥
मैं उठा लूंगा बड़े शौक से उसको सर पर ।
खिदमते कौम में जो रंजो बला आयेगी ॥
सामना सब्रो शुजाअत से करूंगा मैं भी ।
खिंच के मुझ तक जो कभी तेग़े जफ़ा आयेगी ॥

ग़ज़ल ।

देसी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ।
ज़रा चल करके लेकचर सुनादो मुझे ।
रेशमी साड़ी विदेशी यह मुझे भाती नहीं ।
पहनकर कोई विदेशी वस्त्र अब आती नहीं ॥
एक चर्खा चलाने को लादो मुझे ।
देसी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ॥
साबुन विलायती न कभी मैं मंगाऊंगी ।
पोडर विदेश का न कभी मैं लगाऊंगी ॥
जल्दी कंघा स्वदेशी दिलादो मुझे ।
देसी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ॥
फीते व चैन बेल न हरगिज़ लगाऊंगी ।
चूड़ी रबड़ की फेंक के देशी मंगाऊंगी ॥
एक चप्पल की जोड़ी दिलादो मुझे ।
देशी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ॥
ओटो सुगन्ध और लेवन्डर न लाऊंगी ।
सिरमें कभी किलप न विदेशी लगाऊंगी ॥
सारी वस्तू स्वदेशी दिलादो मुझे ।
देशी खद्दर की साड़ी मंगादो मुझे ॥

भजन ।

हे प्रभु ! इस देश भारतवर्ष में शुभ ज्ञान हो
सत्प्रेम, गौरव, ज्ञान गुण का प्रेम से अब मान हो ॥१॥
हम में परस्पर प्रेम हो, शुभ कर्म का सञ्चार हो।
निज देश के उत्थान में दुख द्रोह का संहार हो ॥२॥
सुख से रहें इस देशमें हम प्रेम को तोड़ें नहीं।
निज पूर्वजों के नामको, सब भूल कर बोरें नहीं ॥३॥
देश सेवा में मनुज को, धैर्य से अनुराग हो।
निज देश उन्नति मार्गके, सब कंटकों का नाश हो ॥४॥
अज्ञानतम का नाश हो, सुज्ञान का विस्तार हो।
सर्वत्र ही दारिद्र रूपी काल का संहार हो ॥५॥
हर देशवासी के हृदय में धर्म का संचार हो।
जगदीश ! भारतवर्ष का अब शीघ्र ही उद्धार हो ॥६॥

मातृ बंदना ।

हे मातृ भूमि ! तेरे, चरणों में शिर नवाऊं।
मैं भक्ति भेंट अपनी, सेवा में तेरी लाऊं ॥ १ ॥
माथे पै तू हो चन्दन छाती पै तू हो माला।
जिह्वा पै गीत तू हो, मैं तेरा नाम गाऊं ॥ २ ॥
जिससे सपूत जन्मे, श्रीराम कृष्ण जैसे।
उस तेरी धूलकी मैं, निज शीस पै चढ़ाऊं ॥ ३ ॥
व देश मान वाले, चढ़ कर उतर गये सब।
गोरे रहे न काले, तुमको ही एक पाऊं ॥ ४ ॥
सेवा में तेरी अपने, भेदों को भूल जाऊं।
वह पुन्य नाम तेरा, प्रति दिन सुनूं सुनाऊं ॥ ५ ॥

तेरे ही काम आऊं, तेरा ही मन्त्र गाऊं।
तन और देह तुझ पै, बलिदान मैं चढ़ाऊं ॥ ६ ॥

ग़ज़ल।

हिन्दुस्तान की कमाई देखो फी कस कुछ कौड़ी छः पाई है।
उसमें खर्च होता है जितना फ़ैहरिस्त उनकी बनाई है ॥
तीन की टोपी कमीज़ डेढ़ की टाई बारह आने को।
पांच का चश्मा आठाने का कालर टाई लगाने को ॥
नहीं आठ से कम लगते हैं बास्कट कोट बनाने को।
कमसे कम पतलून चार की गैलिस बारह आने को ॥
तीसरे दिन चार आने इनकी लगने लगी धुलाई है ॥ १ ॥
साढे सात से कम नहीं लगते वेस्टैण्डवाच मंगाने में।
एक रुपये से कम नहीं लगता फैंसी बेत उठाने में ॥
डासन का फूलबूट सात का है मशहूर ज़माने में।
बुरुश और पालिश की शीशी दोनों मिलें नौ आने में ॥
ब्रिटिश की जुर्राब की कीमत दस आने बतलाई है ॥ २
तीस की सेकिंडहैंड साइकिल यह भी आज कल का फैशन।
एक मील नहीं चल सकते हैं पैदल यह मिस्टर इण्डियन ॥
सवा रुपये का घर में सलीपर रखना पड़ता मजबूरन।
ग़लती हो तो कीजै मुआफ़ मैं बतलाता हूँ तखमीनन ॥
एक आना रोजाना इनसे लेता बुद्धू नाई है ॥३॥ हि०
कंघा साबुन तेल सेफ्टोपिन तुमको गिनवाऊं क्या।
एक रुपये से कम में उनकी क़ीमत और लगाऊं क्या ॥
सिगरेट का जिस कदर खर्च है यह तुमको समझाऊं क्या।
"चन्द्र" कहैं यह खर्च थर्ड का फर्स्ट क्लास बतलाऊं क्या।
इस फजूल ख़र्ची ने ही भारत से भीक मंगाई है ॥ ४ ॥

ग़ज़ल ।

आंखों से फिर दिखा दो भगवन् वही ज़माना ।
वह राज्य चक्रवर्ती वह शाने खुसरवाना ॥
सन्तान शेर दिल को बस बुज़दिली मिटा दो ।
भीष्म व भीम सा दो तर्जे बहादुराना ॥
अर्जुन से तीर अफगन पैदा यहां बशर हों ।
तीरे अदू का हर्गिज होवे नहीं निशाना ॥
हो प्रेम भाइयों में रामो लषण सा पैदा ।
दिखलादो फिर भरत सा हुब्बे बिरादराना ॥
आज्ञा में मात पितु के सब कुछ निसार करदें ।
श्री राम सा दिखादो पितु भक्ति मुखलिसाना ॥
गोतम कणाद आदि की फिर कुटियां यहां दिखावें ।
पढ़ने को मिल सकें फिर तहरीर फल-सफाना ॥
मिट जांय आन पर फिर राणाप्रताप से हम ।
वहरे वतन हों पैदा जज़बाबे आशिकाना ॥
गृह देवियों के दिल में होंवे ख्याल पैदा ।
सीता सी प्राणपति से वर्ताव खादिमाना ॥
गुरुकुल की वह प्रणाली रायज यहाँ पर करके ।
कृष्णो सुदामा ऐसा दिखला दो दोस्ताना ॥
शैदाय हक ऋषि सा फिर तो ज़रा दिखा दो ।
तफ़सीर वेद की हो तकरीर आलिमाना ॥
प्रह्लाद और हकीकत से हो धर्म पर कुर्बां ।
सहते रहे हमेशा हरकाते ज़ालि—माना ॥
"सादिक" बहार आये उजड़े हुए चमन में ।
लब पर हो बुलबुलों के फिर कौम का तराना ॥

———

भजन ।

भटक रही हैं दुखों में अब हमे बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन् ।
बनय यही है हमारी हरदम बचाओ स्वामिन्० ॥ १ ॥
विषय बिकारों में फँसकर हमने भले बुरे का न ध्यान रक्खा ।
शरन मैं आये तुम्हारी भगवन् बचाओ स्वामिन्० ॥ २ ॥
बनीं अनारी कहाती अबला न ज्ञान है कुछ न मान है कुछ ।
धरम करम सब विसार बैठीं बचाओ स्वामिन्० ॥ ३ ॥
कलह अविद्या की आग दिल में धधक २ कर जला रही है ।
सुबुद्धि जल की बहा के धारा बचाओ स्वामिन् ॥ ४ ॥
गृहस्थ आश्रम किसे हैं कहते पती की पूजा का अर्थ क्या है ।
दया धरम का मरम न जाने बचाओ स्वामिन्० ॥ ५ ॥
नहीं पढ़ाते हमें हैं कोई न जाने इसका सबब भी क्या है ।
बनाते मूरख शरम न खाते बचाओ स्वामिन्० ॥ ६ ॥
हमीं थीं सीता हमीं थी लक्ष्मी हमीं को कहते थे लोग देवी ।
हमीं से उपजे थे वीर लाखों; बचाओ स्वामिन्० ॥ ७ ॥
हमारा आदर उठा है जब से तभी से भारत चमन है सूखा ।
तभी से कायर कपूत उपजे बचाओ स्वामिन्० ॥ ८ ॥
कभी ये भारत चमक रहा था; सितारा बनके हमारे बल से ।
परन्तु अब ये उजड़ गया है बचाओ स्वामिन्० ॥ ९ ॥
तुम्हीं से आशा हमें है सारी; लगी हुई है नज़र तुम्हीं पर ।
तुम्हीं हो रहबर दिखाओ रस्ता बचाओ स्वामिन्० ॥ १२ ॥

भजन ।

धर्म के नाम पर प्यारो तुम्हें मरना नहीं आता ।
लहू से कासए तक़दीर का भरना नहीं आता ॥

छुरी से पेट फड़वाना तुम्हें आता नहीं प्यारो ।
हक़ीकत की तरह कुरबान सर करना नहीं आता ॥
धर्म की राह पर चलना तुम्हें तो होगया मुशकिल ।
छुरी की धार टेढ़ी पर कदम धरना नहीं आता ॥
तुम हो औलाद शेरों की मगर अब वहर हस्तीर में ।
समय का फेर है सीधा तुम्हें तरना नहीं आता ॥
तबाही का तुम्हारी एक ही कारण है बस मित्रो ॥
तुम्हें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता ॥
'मुसाफ़िर' महवीसद महवो है तेरी हिम्मत पर ।
धर्म की राह में हो नर तुम्हें डरना नहीं आता ॥

भजन ।

धर्म बांसुरी तू बजाए चला जा ।
जो सोते हैं उनको उठाये चला जा ॥धर्म०॥
मिटा दे तू नफ़रत को यक लख्त दिल से ।
तराना मुहब्बत का गाये चलाजा ॥धर्म०॥
न दिल में जगह दे तनफ्फ़ुर को हरगिज ।
प्रेम और उल्फ़त बढ़ाये चलाजा ॥धर्म०॥
उठादे यह तफ़रीक़ सब कहो महकी ।
तू नज़रों में सब की समाये चलाजा ॥धर्म०॥
मुख़ालिफ़ से डरकर न तू हार हिम्मत ।
सदा ओ३म् की तू लगाए चलाजा ॥धर्म०॥
ख़तर क्या है गह दूर मंजिल है अपनी ।
क़दम अपना आगे बढ़ाए चलाचा ॥धर्म०॥
अछूतों के कर बहम को दूर दिल से ।
गले से तू सब को लगाऐ चलाजा ॥ धर्म० ॥
न खा ग़म अगर है मुखलिफ ज़माना ।
तू वेदों का डंका बजाए चलाजा ॥ धर्म ॥
फ़िदा होके ऐ वर्क़ अब क़ौम पर तू ।
तरक्की का ज़ीना बनाए चलाजा ॥ धर्म ॥

नई प्रकाशिक पुस्तकें ।

सूत्र शिलप शिक्षा सचित्र स्त्रीयों को सुई डोरे का काम सिखाने वाली पुस्तक का मूल्य १) स्त्री धर्म बोधनी ।≈) वाल-मीक रामायण अर्थात रामचरित्र चिन्तामणि २।) धर्मवीर हक़ीक़तराय ॥≈) वीर शिवाजी ।≈) मंगला मुखी अर्थात् संस्कार नवीन गीतसंग्रह ।≈) रमणी रतनसागर ।≈) ऐतिहासिक गीता-ञ्जली ।) वीरगायन ≡) स्त्रीसुधार ≈)॥ भजन संकीर्तन –)॥ आदर्श महिला ।) संध्या हवन विधि –) महिला सुन्दरी –) सीता सतवन्ती –) महारानी तारामती –) संसार का आगामी धर्म –) धर्मशिक्षा ≈)

नये २ प्रकाशक ट्रैक्ट ।

महात्मा गांधी का चक्र –)॥ वीर गर्जना –)॥ स्वदेशी गान –)॥ रणभेरी)॥ सुनहरी चिड़िया –) महात्मा गान्धी का सन्देश)॥ शराब का बायकाट)॥ स्वराज डंका)॥ वेदों का डंका)॥ शुद्धी का झंडा)॥ सावन बहार)॥ पतिपत्नी का प्रेम)। शारदाविल)॥ मर्दाने का जलवा)॥ शुद्ध संगठन)॥ फैशन की हेडमास्टरनी)॥ मन मोहनी)॥ चटपटा मसाला)॥ वीर क्षत्राणी)॥ दलित उद्धार)॥ होली की बहार)॥ रंगीली होली)॥ बाले मियां की पूजा)॥ भारत माता के भगत –)॥ स्वाराज्य की लहर)॥ झांसी की रानी –)॥

छोटी साइज़ के ट्रैक्ट ।

बाल प्रश्नोत्तरी)॥ कन्या प्रश्नोत्तरी)॥ भजन रामायण)॥ ईश्वर प्रार्थना)॥ मंगला मुखी छोटी)॥ छत्रपति शिवाजी)॥ वैदिक संध्या)॥ हवन मंत्र)॥ वैदिक रसिया)॥

पुस्तकें मिलने का पता—

ज्वालाप्रसाद वर्मा बुकसेलर आगरा ।